

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने अपने प्रसिद्ध जामिया के प्रेमचंद अभिलेखागार में छात्रों को डिजिटलीकरण और मेटाडेटा निर्माण की प्रक्रियाओं से परिचित कराने के लिए कार्यशाला का किया आयोजन

नई दिल्ली, 25 अगस्त 2025

जामिया मिल्लिया इस्लामिया स्थित प्रेमचंद अभिलेखागार एवं साहित्य केंद्र (जेपीएलसी) ब्रिटिश लाइब्रेरी के लुप्तप्राय अभिलेखागार कार्यक्रम (ईएपी) अनुदान द्वारा वित्त पोषित डिजिटलीकरण परियोजना "मार्जिनल हिस्ट्रीज़: जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना और भारत का स्वतंत्रता संग्राम" के अंतर्गत डिजिटलीकरण, फोटोग्राफी और अभिलेखागार पर कार्यशालाओं और मास्टरक्लास की एक श्रृंखला आयोजित कर रहा है।

20 अगस्त 2025 को एजेके मास कम्युनिकेशन रिसर्च सेंटर (एमसीआरसी) के स्टिल फोटोग्राफी और विजुअल कम्युनिकेशन में पीजी डिप्लोमा के शिक्षकों और छात्रों ने एक कार्यशाला में भाग लिया, जिसमें उन्हें डिजिटलीकरण और मेटाडेटा निर्माण की पूरी प्रक्रिया से परिचित कराया गया।

जेपीएलसी जिस सामग्री को संरक्षित करना चाहता है वह 1950 से पहले की है और मोटे तौर पर दो सेटों में आती है। पहले सेट में जेएमआई के संस्थापकों और पायनियर्स से संबंधित संग्रह शामिल हैं जो प्रमुख राष्ट्रीय नेता भी थे। सामग्री का दूसरा सेट साहित्यिक दिग्गजों का संग्रह है, जिनकी रचनाएँ उस सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक परिवेश का समृद्ध और जीवंत विवरण प्रदान करती हैं जिसमें जामिया का जन्म हुआ था। ये सामग्री जेपीएलसी के संग्रह के लिए दुर्लभ और अनूठी हैं। पहले सेट में मौलाना मोहम्मद अली (1878-1931), डॉ. एम. ए. अंसारी (1880-1936), मौलाना शौकत अली (1873-1938), हामिद अली खान, ए. एम. ख्वाजा (1885-1962) डॉ. जाकिर हुसैन (1897-1969) और शफीकुर रहमान किदवई (1901-1953) के संग्रह शामिल हैं। दूसरे सेट में साहित्य जगत के दिग्गजों मुंशी प्रेमचंद (1880-1936), देवेंद्र सत्यार्थी (1908-2000), पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी, हामिद हसन कादिरि (1887-1980), बेगम अनीस किदवई (1906-1982) और प्रो. ख्वाजा अहमद फारूकी (1917-1986) के संग्रहों को डिजिटल रूप देने का प्रयास किया गया है। पत्रों, डायरियों, पत्राचार, रजिस्ट्रों, स्क्रेपबुक, तस्वीरों, दीक्षांत समारोह के भाषणों, अखबारों की कतरनों, प्रमाणपत्रों, पत्रिकाओं, जर्नलों, नोटपैड और दुर्लभ पुस्तकों से युक्त ये संग्रह जामिया मिल्लिया इस्लामिया के संस्थापकों और शुरुआती पायनियर्स द्वारा निभाई गई भूमिका के प्रमाण हैं।

पिछले सप्ताह स्टिल फोटोग्राफी और विजुअल कम्युनिकेशन में पीजी डिप्लोमा, एजेके एमसीआरसी के छात्रों और शिक्षकों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई, जिसने उन्हें डिजिटलीकरण और मेटाडेटा निर्माण की पूरी प्रक्रिया से परिचित कराया। इसका समन्वयन कोर्स समन्वयक और एसोसिएट प्रोफेसर, सोहेल अकबर ने किया, जिन्होंने पहले भी निकॉन कैमरों के उपयोग में डिजिटलीकरण विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। प्रो. शोहिनी घोष, निदेशक (ऑफलाइन) ने प्रतिभागियों और रिसोर्स पर्सन का स्वागत किया, और जेपीएलसी और ईएपी परियोजना का अवलोकन प्रदान किया। कार्यक्रम में पुरालेखपाल सैयद मोहम्मद आमिर और श्रद्धा शंकर के नेतृत्व में जेपीएलसी का एक निर्देशित दौरा शामिल था। पुरालेखपाल स्निग्धा रॉय ने नाजुक दस्तावेजों को संभालने पर ध्यान केंद्रित करते हुए डिजिटलीकरण वर्कफ़्लो की व्याख्या की। अकिफ सत्तार (डिजिटलीकरण विशेषज्ञ) यह कार्यशाला जेपीएलसी द्वारा नाजुक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित

करने और साथ ही नई पीढ़ी को अभिलेखीय प्रथाओं का प्रशिक्षण देने के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई।

2004 में स्थापित, ब्रिटिश लाइब्रेरी का लुप्तप्राय अभिलेखागार कार्यक्रम (ईएपी) दुनिया भर से संवेदनशील अभिलेखीय सामग्रियों को संरक्षित और सुलभ बनाने के लिए स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य कम से कम पचास वर्ष से अधिक पुरानी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना है जो लंबे समय, क्षरण, संघर्ष, या पर्यावरणीय क्षति या अपक्रमण के कारण नष्ट होने के जोखिम में है। यह कार्यक्रम मुख्य रूप से उन परियोजनाओं को वित्तपोषित करके ऐसा करता है जो पांडुलिपियों, दुर्लभ मुद्रित कृतियों, तस्वीरों और ध्वनि रिकॉर्डिंग जैसे लुप्तप्राय संग्रहों का डिजिटलीकरण करती हैं।

जेपीएलसी के कर्मचारियों ने एक विस्तृत प्रस्ताव तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए कड़ी मेहनत की और प्रतिष्ठित अनुदान प्राप्त करने के लिए कई मूल्यांकन दौर सफलतापूर्वक पार किए। ईएपी का उद्देश्य न केवल नाजुक अभिलेखागारों का संरक्षण करना है, बल्कि कार्यशालाओं और मास्टर कक्षाओं के माध्यम से स्थानीय क्षमता का निर्माण भी करना है। क्षमता निर्माण की इसी भावना से डिजिटलीकरण, फोटोग्राफी और अभिलेखीय कार्यशालाओं पर कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी